IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

हिंदी जन क्षेत्र का विकास: भाषा और सामाजिक सरोकार

19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध की हिंदी पत्रकारिता के संदर्भ में

डॉ सतीश कुमार सिंह

जी 3, 906, रचना टॉवर, रचना नगर, भोपाल

skumarsingh7@gmail.com

'जनक्षेत्र ''[1] की अवधारणा का गहरा संबंध आधुनिक लोकतंत्र से है | भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह राष्ट्रवाद के विकास से संबद्ध रहा है | भारत में लोकतंत्र की चेतना राष्ट्रवाद और नवजागरण से संबंधित गतिविधियों के भीतर विकसित हुई | दूसरे शब्दों में, लोकतंत्र की चेतना औपनिवेशिक युग में लगभग सौ वर्षो तक भारत की भौगोलिक सीमा और सभ्यता-संस्कृति से जुड़े प्रश्नों के अंतर्गत विस्तार पाती रही | यह आकस्मिक नहीं है कि फ्रांचेस्का आर्सीनी[2] ने अपनी पुस्तक 'हिंदी पब्लिक स्फियर ' में राष्ट्रवाद को मुख्य अंतर्चेतना के रूप में रखकर भाषा, साहित्य और पत्रकारिता आदि को अध्ययन का विषय बनाया है |[3]

फ्रांचेस्का आर्सीनी की पुस्तक का अनुवाद हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि और आलोचक नीलाभ ने किया है 'हिंदी का लोकवृत्त ' शीर्षक से | 'लोकवृत्त ' पद आकर्षक है, लेकिन प्रचलित नहीं हो सका है | 'लोक ' के अंग्रेजी में दो अर्थ होते है_ 'फोक ' और 'पीपॅल ' | 'फोक ' शब्द 'पब्लिक ' के अर्थ में कोई मायने नहीं रखता | दूसरे शब्द के अर्थ होते हैं- 'लोग ' 'जाति ' (नेशन), 'जनता ', प्रजा आदि |[4] अंग्रेजी शब्द 'पब्लिक ' को भी 'लोक ' में समाहित किया जा सकता है | इसलिए नीलाभ द्वारा किया गया अनुवाद सही है |

'स्फियर ' के लिए 'वृत्त ' शब्द ठीक है, लेकिन यह 'पब्लिक स्फियर ' की अवधारणा को बहुत स्पष्ट नहीं करता। 'पब्लिक स्फियर ' से अभिप्राय है जनसंवाद के क्षेत्र, जिसके अंतर्गत प्रेस, क्लब, सोसायटी, मंचीय कार्यक्रम, गोष्ठियां, साहित्यिक-कलात्मक व्यवहार और अन्य सांस्कृतिक-राजनीतिक आचरण आते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

इसलिए शाब्दिक अर्थ को दृढ़ता से न पकड़कर हम 'पब्लिक स्फियर ' के लिए 'जनक्षेत्र ' पद का उपयोग करें तो वह अनुचित नहीं होगा |

'जनक्षेत्र' , सामान्य रूप से कहे जैसा कि जुर्गेन हेबरमास ने प्रतिपादित किया है, जनता का मंच है, जिसमे जनता अनेक प्रकार की अभिव्यक्तियों के द्वारा विचारो को साझा करती है। इससे जनमत तैयार होता है जो सत्ता (व्यवस्था) पर दबाव डालने का कार्य करता है। 'पब्लिक ' का विपर्यय है सत्ता (पावर) अथवा सरकार (जैसे नागरिक¥सिविल का विपर्यय है मिलिट्री)। यानी 'जनता ' का विपर्यय है सरकार, जिसके अंतर्गत शासन-प्रशासन, पुलिस, न्यायालय, वर्चस्वशील विचारधारा (राजतंत्र, पूंजीवाद विचारधारा) सभी आते हैं। जनक्षेत्र गैरसरकारी संवाद का क्षेत्र है। यह विभिन्न स्तरों पर संवाद के जरिए लोकतांत्रिक सहमति और वातारण तैयार करने का कार्य करता है | इसमें शैक्षणिक संस्थानों और प्रेस-मीडिया की सबसे अहम भूमिका होती है | हेबरमास ने जनक्षेत्र को परिभाषित करते हुए लिखा है-

जनक्षेत्र से हमारा तात्पर्य सर्वप्रथम हमारे सामाजिक जीवन के ऐसे क्षेत्र से है जहां सार्वजनिक विचार जैसी चीज बनती है। सिद्धांतः जनक्षेत्र सभी नागरिकों के लिए खुला होता है। जनक्षेत्र का एक हिस्सा प्रत्येक उस बातचीत में होता है जिसमें निजी लोग एकत्र होकर एक 'सार्वजनिक' का निर्माण करते हैं। वे तब न व्यावसायिक या व्यापारिक लोगों की तरह निजी कार्य निपटा रहे होते हैं, न न्यायिक लोगों की तरह जो राज्य ब्यूरोक्रेसी के न्यायिक नियमों के अधीन और आज्ञापालन के लिए बाध्य होते हैं। नागरिकगण, जनता के रूप में तब कार्य करते हैं जब वे सामान्य रुचि के विषयों पर बिना बलाधीनता का विषय बने बातचीत करते हैं। इस प्रकार यह सुनिश्चित रहता है कि वे स्वतन्त्रतापूर्वक एकत्र हो सकते हैं, एकजुट हो सकते हैं और अपने विचारों को अभिव्यक्त और प्रचारित कर सकते हैं। [5]

इस परिभाषा के हिसाब से जरूरी है एक सामान्य और व्यापक भाषा का अस्तित्व जो संवाद के विभिन्न माध्यमों में अपनी सक्रियता का परिचय दे सके। भाषा का मामला केवल सामाजिक नहीं होता है, उसके राजनीतिक अभिप्राय भी होते हैं। किसी भी भाषा का व्यापक क्षेत्र में चुनाव राजनीतिक सत्ता से प्रभावित होने और उसे प्रभावित

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

करने से जुड़ा होता है। फ्रांचेस्का ऑर्सीनी के शब्दों में, 'भाषा के मामले में विकल्प और चुनाव राजनीतिक क्षेत्र के प्रति रवैयों को प्रतिबिंबित करते हैं।' [6] इसमें जोड़ने की आवश्यकता है कि भाषाई आचरण सांस्कृतिक वर्चस्व से संबद्ध होता है। संस्कृति की अभिव्यक्ति के अनेक क्षेत्र हैं। आधुनिककाल में ये अधिक व्यापक रूप से दिखाई पड़ते हैं। हेबरमास ने 'जनक्षेत्र' लेख में स्पष्ट किया है कि व्यापक जनता के संप्रेषण के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। आज के जमाने में समाचार पत्र और पत्रिकाएं, रेडियो और टेलीविजन के क्षेत्र मुख्य माध्यम हैं। ये माध्यम राज्य के व्यवहार संबंधी विषयों से जुड़े होते हैं। राज्य की वर्चस्वशाली शक्ति राजनीतिक क्षेत्र की प्रतिरूप होती है। आधुनिक युग में राज्य की शक्ति को जनता की शक्ति माना जाता है। जब जनता की प्रभुत्वशीलता का वास्तव में उपयोग लोकतांत्रिक सार्वजनिकता की जरूरत के अंतर्गत होती है तभी राजनीतिक शक्ति भी संवैधानिक वैधता प्राप्त कर पाती है।[7]

वस्तुतः हेबरमासने जन क्षेत्र की अवधारणा सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी के यूरोप के बुर्जुवावर्ग को ध्यान में रखकर पेश किया है और आगे के कालखंडों में उसकी विविधता पर नजर डाला है। जनक्षेत्र आमजनता के सार्वजनिक सरोकार अथवा हित से जुड़ा है। जनक्षेत्र का विशेष उद्देश्य निरंकुशतावादी राज्य की आलोचना करने और उस पर दबाव डालने से संबंधित है। बुर्जुवावर्ग के उदय से पहले सामन्त वर्ग शासक भी था और जनता भी था। भारत के संदर्भ में इसे उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में अलगढंग से पहचानने की जरूरत है। भारत का जमींदार वर्ग बिचौलिया था। उसे शासक नहीं कहा जा सकता, किंतु उसका बर्ताव शासक जैसा था। परंपरागत भारतीय समाज में भारत में जब आधुनिकता का पदार्पण नही हुआ था और कृषि-समाज ही मुख्य था, तब जनक्षेत्र जैसी कोई बात कम ही दिखाई पड़ती है। हमारे यहां ग्रामीण चौपाल हुआ करता थे, जिनमें जनक्षेत्र जैसी अवधारणा का थोड़ा ही संकेत मिल सकता है। अंग्रेजी राज्य में जब मध्य वर्ग का विकास हुआ तो जनक्षेत्र के विकास के नए दरवाजे खुले। फिर भी भारत के मध्य वर्ग को यूरोप के बुर्जुवा वर्ग से अलग स्थिति में देखने की आवश्यकता है। बहुत पीछे जाकर देखें तो प्राचीन भारत में भी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

जनक्षेत्र के संकेत देख जा सकते हैं। हमारे यहां संवाद की पुरानी परंपरा रही है, जिसमें शास्त्रार्थ आदि को शामिल किया जा सकता है। इस दृष्टि से बौद्धों की संवादशीलता भी ध्यान देने योग्य है। अमर्त्य सेन ने लिखा है–

भारत में जनसंवाद के विकास का अच्छा खासा श्रेय प्रारंभिक बौद्धों को दिया जाना चाहिए। उनकी सामाजिक प्रगति के माध्यम के रूप में विचारों के आदान-प्रदान के प्रति गहरी निष्ठा थी। इसी निष्ठा ने विश्व में संभवतः पहली खुली जनसभाओं को भी जन्म दिया था। बौद्धिक महासम्मेलनों में विभिन्न स्थानों से अन्याय विचारधाराओं के अनुगामी विद्वान एकत्र होकर पृथक-पृथक दृष्टिकोणों में निहित अंतरों और टकरावों को दूर करने का प्रयास करते थे। ऐसे चार महासम्मेलनों में से प्रथम का आयोजन तो गौतम बुद्ध की मृत्यु के तुरंत पश्चात राजगृह में हुआ था। दूसरा सम्मेलन लगभत 100 वर्ष बाद वैशाली में और अंतिम सम्मेलन दूसरी शताब्दी में कश्मीर में हुआ था। किन्तु तीसरा सम्मेलन ही सबसे अधिक विख्यात है। इसका आयोजन सम्राट अशोक के संरक्षण में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में उस समय की भारत राजधानी पाटलीपुत्र (आज का पटना) में हुआ था। इन महासम्मेलनों का मुख्य ध्येय तो धार्मिक विचारों और व्यवहार से जुड़े प्रश्नों पर विचार करना था, किन्तु इनमें सामाजिक और नागरिक कर्तव्यों के तकाजों पर भी व्यापक चर्चाएं होती थीं। इस प्रकार ये विवादास्पद मामलों पर खुली और खुले मन से चर्चा की परंपरा को और समृद्ध बनाने में भी सहायक रहे हैं।[8]

जनसंवाद के लिए न केवल बौद्धों को श्रेय दिया जाना चाहिए, इस दृष्टि से जैन परंपरा भी महत्व रखती है। जैन दर्शन में अनेकांतवाद है, जो स्यादवाद का पर्याय है। 'उसका प्रयोग' रामविलास शर्मा के शब्दों में, 'हम डायलेक्टिस की जगह भी कर सकते हैं।' [9] 'अनेकांत' का अर्थ है एक नहीं अनेक अंत। कोई एक दृष्टि सत्य तक नहीं पहुंच सकती और जरूरी नहीं कि सत्य भी एक हो। यह संदेहवादी प्रणाली है जिसका प्रयोग यूनान भी किया जाता था। यह शास्त्रार्थ अथवा वक्तृत्व (रेटॅरिक) की प्रणाली है, जिसका जनसंवाद में असंदिग्ध महत्व है। इस प्रणाली से सनातनी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

परंपरा में भी शास्त्रार्थ की पर्याप्त मात्रा देखी जा सकती है, जिसे बाद के काल में कम महत्व दिया गया।

आधुनिक भारत ने जब लोकतांत्रिक विमर्शों को जनमत तैयार करने का मार्ग अपनाया तो इसके पीछे केवल पश्चिमी मॉडल ही काम नही कर रहा था, बल्कि हमारी अपनी जन-संवाद और विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां भी आधार का काम कर रही थीं। यह आकस्मिक नही है कि भारत जब स्वतंत्र हुआ तो वह उस समय अकेला गैर-यूरोपीय देश था, जिसका पूर्ण झुकाव लोकतंत्र की ओर था |

जनक्षेत्र के निर्माण में प्रेस की भूमिका अग्रणी रही है (प्रेस के अंतर्गत पत्रकारिता के अतिरिक्त अन्य प्रकार के प्रकाशन शामिल हैं) प्रेस के द्वारा बड़े पाठक समुदाय का निर्माण हुआ, जिसकी जनक्षेत्रा के विकास में मुख्य हिस्सेदारी साबित हुई | 19वींशताब्दी के उत्तरार्द्ध में साहित्यिक अभिव्यक्तियों को विशेष महत्व प्राप्त होने लगा था | साहित्यिक अभिव्यक्तियों को भी सबसे बड़ा मंच पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा मिला | साहित्य और पत्रकारिता के बीच अभिन्न संबंध रहा था | दोनो के स्वतंत्र 'डिसिप्लिन ' बनने का इतिहास बहुत नया है।

हमारे विचार का मुख्य विषय है जनक्षेत्र के विकास में पत्रकारिता की भूमिका। भारत में पत्रकारिता का विकास 19वीं शताब्दी में हुआ, हालांकि इसकी नींव 1780 में पड़ चुकी थी। भारत का पहला पत्र 'बंगाल गजेट' को माना जाता है। इसके संपादक जेम्स आगस्ट हिकी थे। इसलिए बंगाल गजेट को हिकी गजेट भी कहते हैं। बंगाल गजेट का पहला अंक 29 जनवरी 1780 में प्रकाशित हुआ था। इस तिथि को भारत की पत्रकारिता का जन्मदिवस माना जाता है।[10] 'बंगाल गजेट' के बाद अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओं में पत्र-पत्रिकाएं निकलनी शुरू हो गई थीं। हिंदी में पहला साप्ताहिक पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई 1826 में प्रकाशित हुआ, जिसके संपादक युगल किशोर शुक्ल थे। 30 मई 1826 को हिंदी का पत्रकारिता दिवस माना जाता है। 'उदन्त मार्तण्ड' के कुल 79 अंक निकले थे। इसका अंतिम अंक 4 दिसंबर 1827 को प्रकाशित हुआ था। 'उदन्त मार्तण्ड' के बाद और भारतेंदु हरिश्चंद्र की 'हरिश्चंद्र मैग्जीन' (1873 ई.) के बीच बीसियों हिंदी पत्र निकले।[11]

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

'उदन्तमार्तण्ड' केवल इस दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं था कि वह हिंदी का पहला पत्र था बल्कि हिंदी भाषा के निर्माण में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी जनक्षेत्र के निर्माण की दृष्टि से भी उसे महत्व दिया जाना चाहिए। जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ने लिखा है कि उसकी पत्रकारिता पहले अंक से ही काफी पुष्ट थी।[12] 'उदन्तमार्तण्ड' में 19वीं शताब्दी की बोलचाल की भाषा का स्वाभाविक रूप देखा जा सकता है। यह पत्र वैसे समय में प्रकाशित हुआ था जब हिंदी का थोड़ा भी मानकीकरण नहीं हुआ था। वैसे समय में उसके संपादक युगल किशोर शुक्ल की हिंदी का एक नमूना इस प्रकार है–

यह 'उदन्तमार्तण्ड' पहले-पहल हिंदुस्तानियों के हित के हेतु जो आज तक किसी ने नहीं चलाया, पर अंगरेजी ओ पारसी ओ बंगाले में जो समाचार का कागज छपता है, उसका सुख उन बोलियों के जानने और पढ़ने वालों को ही होता है। इससे सत्य समाचार हिंदुस्तानी लोग देखकर आप पढ़ ओ समझलेय ओ पराई अपेक्षा न करें ओ अपने भाषा की उपज न छोड़ें, इसलिए बड़े दयावान करुणा और गुण निकेनिधान सबके कल्यान के विषय गवर्नर जेनेरेल बहादुर की आयस से है अैसे साहस में चित्तल गाय के एक प्रकार से यह नया ठाट ठाटा।[13]

'उदन्तमार्तण्ड' कीभाषाकोजहांजगदीशप्रसादचतुर्वेदीपुष्टभाषाबतातेहैंवहींडॉ. अर्जुनतिवारीकामतहैकिउसकीभाषाविचित्रहै। उसमेंकहींभीएकरूपतानहीं है।[14] उल्लेखनीयहैकि 'उदन्तमार्तण्ड' केसमयपत्रकारिताकेलिए 'कागज' शब्दचलताथा। उससमयपत्रकारिताकीमुख्यभाषाएंअंग्रेजी, पारसीऔरबंगलाथीं। 'उदन्तमार्तण्ड' केसंपादकयुगलकिशोरशुक्लकेलिएसबसेजरूरीविषयथाकिहिन्दुस्तानियोंकेलिएहिंदीभाषामें 'कागज' (पत्र) छपे, जिसमेंविभिन्नप्रकारकीजानकारियांदीजासके। इसकेलिएउन्हेंअथकप्रयासकरनापड़ाथा।

उससमयपत्रनिकालनेकेलिएलाइसेंसलेनाहोताथा, जोउन्होंने 16 फरवरी 1826 कोप्राप्तकिया था।[15]

'उदन्तमार्तण्ड' हिंदीमेंएकप्रयासथा। उसकीभाषाथोड़ीखिचड़ीथी। उसमेंअवधि,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

ब्रजभाषा, उर्दूऔरबंगलासेप्रभावितहिंदीकारूपदेखाजासकताहै। उसकासामाजिकसरोकारबहुतस्पष्टनहींथा। उससमयहिंदीकेपाठकवर्गकाउदयभीनहींहुआथा। भारतकामध्यवर्गअपनीशिशुअवस्थामेंथा।

इनसीमाओंकोदेखतेहुएजगदीशप्रसादचतुर्वेदीनेसहीकहाहै,

"एकप्रकारसेयुगलकिशोरशुक्लनेभविष्यकेहिंदीपत्रोंऔरहिंदीकेगद्धकावहरूपस्थापितकियाहै , जोभारतेंदुहरिश्चंद्रकेउदयसेपूर्वहिंदीपत्रोंकामान रहा" ।[16]

'जनक्षेत्र' केनिर्माणकीदृष्टिसेराजाराममोहनरायकायोगदानअत्यंतमहत्वपूर्णहै। 'उदन्तमार्तण्ड' केबंदहोनेकेबाद 'बंगदूत' प्रकाशितहुआ। यहपत्रअंग्रेजी, बंगला, हिंदीऔरफारसीचारभाषाओंमेंछपताथा। इसकेप्रेरणापुरूषराजाराममोहनरायहीथे। राजाराममोहनरायउससमयकीसामाजिक-धार्मिकस्थितियोंकोदेखतेहुए 'ब्राह्मोंसमाज' कीस्थापनाकीथी, जिसकाउद्देश्यहिंदूधर्मावलंबियोंमेंएकजुटतापैदाकरनाथा। इसीउद्देश्यसे 'बंगदूत' निकालागयाथा। 'बंगदूत' मेंसनातनशास्त्रार्थकीपरंपराकोआगेबढ़ायागयाथा, जो 19वीं शताब्दीके 'जनक्षेत्र' केनिर्माणकीदृष्टिसेमहत्वपूर्णहै।

आचार्यरामचंद्रशुक्लनेरामाराममोहनरायकीभाषापरविचारकरतेहुएलिखाहै,

"राजासाहबकीभाषामेंएकआधजगहकुछबंगलापनजरूरमिलताहै, परउसकारूपअधिकांशमेंवहीहैजोशास्त्रज्ञविद्वानोंकेव्यवहारमेंआता था" ।[17]

राजाराममोहनरायकेपहलेजैसीहिंदीलिखीजातीथीऔरउनकेबादजैसीहिंदीलिखीगई, दोनोंकोध्यानमेंरखतेहुएकहाजासकताहैकिराममोहनराय 'साधुभाषा' केनिर्माणकीदिशामेंआगेबढ़रहेथे। यद्यपि 'बंगदूत' कलकत्तासेनिकलताथा, लेकिनउसमेंअखिलभारतीयस्तरतकप्रसारकीआकांक्षाथी। इसमेंभारतकीभाषाओंकेआपसीमेल-जोलकीभरसककोशिशथी।

यहपत्रएकसालतकहीनिकलपाया। इसकेबाद 'बनारसअखबार' कानामआताहै। हिंदीप्रदेशसेनिकलनेवालायहपहलापत्रथा, जोराजाशिवप्रसादसितारेहिंदकेद्वारानिकालागयाथा। इसकीभाषाकोलेकरकाफीविवादहैं। हिंदीकेप्रबलसमर्थकलोगोंनेइसेउर्दूकापत्रकहाहै।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

उर्दूवालोंकीतरफसेभीइसतरहकीबातकहीगईहै। 1848 केसरकारीरिपोर्टकीजानकारीकेअनुसारयहीबातदिखाईपड़तीहै।

बनारसअखबारभीअसलमेंएकउर्दूअखबारहै, हालांकिइसकीलिपिनागरीहै। यहलीथोप्रणालीसेछपताहै।

इसमेंसाधारणतयाधर्मशास्त्रऔरइसीप्रकारकीसंस्कृतपुस्तकोंकेअनुवादछपतेहैं। इसकेअलावाइसमेंस्थानीयसमाचारोंकोछोड़करऔरकुछनहींहैऔरयेभीसाधारणतयाअन्यसमाचारपत्रोंसेनकलकिएजातेहैं। [18]

आचार्यरामचंद्रशुक्लकामतहैकियहमूलतः देवनागरीमेंछपनेवालाउर्दूकापत्रहै। इसमेंहिंदीनाममात्रकेलिएहोतीथी। जैसे, 'धर्मात्मा', 'परमेश्वर', 'दया' आदिकुछ शब्द।[19]इसकेबावजूद, राजाशिवप्रसादसितारेहिंदकाहिंदीभाषाकेक्षेत्रमेंअपूर्वयोगदानकहाजासकताहै। वेपहलेव्यक्तिथेजिन्होंनेफारसीलिपिकीजगहदेवनागरीलिपिकीमांगउठाईथी। वे, वीरभारततलवारकेशब्दोंमें, हिंदीनवजागरणकेप्रवर्तकऔरउसकेअंग थे।[20] 'बनारसअखबार' कीप्रतिक्रियामेंकाशीसेही 'सुधाकर' निकला। 'सुधाकर' काप्रथमप्रकाशन 1850 बतायाजाताहै। अंबिकाप्रसादवाजपेयीनेहिंदीमेंइसकाप्रकाशनकाल 1853 सेमानाहै, जोसहीजानपड़ताहै। आचार्यरामचंद्रशुक्लनेलिखाहै, "इसपत्रकीभाषाबहुतसुधरीहुईतथाठीकहिंदी थी।" [21] 'सुधाकर' केबाद 1852 मेंआगरासे 'बुद्धिप्रकाश' निकला। गार्सा द तासीनेमानाहैकिइसपत्रकीभाषावहीहै, जोबादमेंविकासपाकरहिंदीगद्यकीभाषा बनी।[22] रामचंद्रशुक्लनेभीयहलिखतेहुएकि 'बुद्धिप्रकाश' कीभाषाउससमयकोदेखतेहुएबहुतअच्छीहोतीहै, उसकीभाषाकादोदृष्टांतप्रस्तुतकिएहैं।

कलकत्तेकेसमाचार

इसपश्चिमीयदेशमेंबहुतोंकोप्रकटहैकिबंगालेकीरीतिकेअनुसारउसदेशकेलोगआसन्नमृत्युरोगीको गंगातटपरलेजातेहैंऔरयहतोनहींकरतेकिउसरोगीकेअच्छेहोनेकेलिएउपायकरनेमेंकामकरें और उसेयत्नसेरक्षामेंरखेंवरन्उसकेविपरीतरोगीकोजलकेतटपरलेजाकरपानीमेंगोतेदेतेहैंऔर 'हरीबोल' कहकरउसकाजीवलेतेहैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

स्त्रियोंकीशिक्षाकेविषय

स्त्रियोंमेंसंतोषऔरनम्रताऔरप्रीतयहसबगुणकर्तानेउत्पन्नकिएहैं, केवलविद्याकीन्यूनताहै, जोयहभीहोतोस्त्रियोंअपनेसारेऋणसेचुकसकतीहैऔरलड़कोंकोसिखानापढ़ानाजैसाउनसेबनस कताहैवैसादूसरोंसेनहींयहकामउन्हींकाहैकिशिक्षाकेकारणबाल्यावस्थामेंलड़कोंकोभूलचूकसेब चावेंऔरसरलसरलविद्याउन्हें सिखावें।[23]

कलकत्तासेनिकलनेवालेपत्रोंकीतुलनामेंयहअलगहीभाषादिखाईपड़तीहै।

इसेआधुनिकहिंदीभाषाकेविकासकीदृष्टिसेमहत्वदियाजानाचाहिए।

यहआजकीहिंदीकेबहुतनिकटकीभाषाहै। यहदिलचस्पहैकियहपत्रआगरासेनिकलनाथा, जोबृजभाषाकागढ़रहाहै, फिरभीइसपरउसकाप्रभावनहींहै। उससमयजोलोगहिंदीको 'गंवारूबोली' मानतेथे, उनकोइसकीभाषाएकठोसउत्तरहै। सामाजिकसरोकारकीदृष्टिसेभीइसपत्रकाखासमहत्वहै। हजारीप्रसादद्विवेदीनेलिखाहै, "उसयुगकोदेखतेहुएबुद्धिप्रकाशकोसामाजिकदृष्टिसेप्रगतिशीलकहाजासकता है।" [24]

'जनक्षेत्र' काअर्थहै, जैसाकिऊपरकहाजाचुकाहैहमारेसामाजिकजीवनकावहएकऐसाक्षेत्रहैजिसमेंसामान्यसरोकार जैसीकोईचीजआकारलेसके।

इसअवधारणाकेअनुरूपसंवादकेलिएएकसाझीभाषाकाहोनाजरूरीहै। 19वीं शताब्दीकेतीनमिशनथे– नागरीलिपि, हिंदीभाषाऔरगोरक्षा। 19वीं शताब्दीकेपूर्वार्थमेंदेवनागरीलिपिऔरहिंदीभाषाकेलिएजोप्रयासकिएगएउन्हेंअनिवार्यरूपसेमह त्वदियाजानाचाहिए। यूरोपमेंजिसे 'रिनेसांस' कहाजाताहैऔरजिसकेलिएहिंदीमें 'पुनर्जागरण' अथवा 'नवजागरण' कहाजाताहै, उसकीपृष्ठभूमिहिंदीमें 19वीं शताब्दीकेउत्तरार्धमेंतैयारहोरहीथी। 1857 केप्रथमस्वतंत्रतासंग्रामकीपराजयकेबादउसअभियानकोकुछसमयकेलिएधक्काअवश्यलगा, लेकिनएकदशककेबादवहनईचेतनाकेसाथउभरनेलगाऔरहिंदीजनक्षेत्रकासदीकेअंततकपर्याप्त विस्तारहुआ।पत्रकारिताकीउसमेंभूमिकामहत्वपूर्णहै।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

संदर्भ एवं टिप्पणियां-

1. जर्मनदार्शनिकजुर्गनहैबरमासद्वाराप्रचलितअवधारणा।
2. इतालवीविदुषी, जोलंदनविश्वविद्यालयमेंउत्तरभारतीयसाहित्यकीप्रोफेसरहै ।
3. फ्रांचेस्काऑर्सीनीनेअपनेअध्ययनको 1920 से 1940 तकसीमितकाहै।
4. देखे, अंग्रेजी-हिंदीकोश, फादरकामिलबुल्के ।
5. समयमेंहस्तक्षेप, संपादक: रघुवंशमणि, हेबरमासकालेख 'जनक्षेत्र', पृ. 25।
6. फ्रांचेस्काऑर्सीनी, हिंदीकालोकवृत, पृ. 30।
7. देखें, समयमेंहस्तक्षेप, संपादक: रघुवंशमणि, हेबरमासकालेख 'जनक्षेत्र', पृ. 25।
8. अमर्त्यसेन, भारतीयअर्थतंत्र, इतिहासऔरसंस्कृति, पृ. 29
9. रामविलासशर्मा, मार्क्सऔरपिछड़ेहुएसमाज, पृ. 282
10. देखें, रामनिरंजनपरिमलेन्दुभारतेंदुकालकाअल्पज्ञातहिंदीगघसाहित्य, पृ. 236,
11. 1873 ई. सेपहलेजोउल्लेखनीयपत्रनिकलेउसकाब्यौराइसप्रकारहै- बनारसअखबार (प्रकाशनारम्भसन 1845 ई. काशी), 'मार्तण्ड' (प्रकाशनारम्भसन 1846 ई. कलकत्ता)[3], 'सुधाकर'(प्रकाशनारम्भसन 1850 ई. काशी), 'साम्यदण्डमार्तण्ड' अथवा 'सामदण्डमार्तण्ड' (सन 1850 ई.- अप्रैल, 1852 ई.। संपादकपंडितयुगलकिशोरशुक्ल, भूतपूर्वसंपादक 'उदन्तमार्तण्ड'), बालकोपयोगीपत्र 'बालकोंकेलिएफूलोंका हार'[4] (प्रकाशनारम्भसन 1850 ई., ओरफनप्रेस, मिर्जापुर), 'बुद्धिप्रकाश' (प्रकाशनारम्भसन 1852 ई. आगरा), 'ग्वालियारगजट' (प्रकाशनारम्भसन 1853 ई. ग्वालियर), साप्ताहिक 'सर्वहितकारक' (प्रकाशनारम्भसन 1855 ई. आगरा), 'प्रजाहितैषी' (प्रकाशनारम्भसन 1855 ई. आगरा। राजालक्ष्मणसिंह), 'पयामेआजादी' (प्रकाशनारम्भसन 1857 ई. दिल्ली। अजीमुल्लाखां), 'समाचारसुधावर्षण' दैनिकपत्र (प्रकाशनारम्भसन 1845 ई. कलकत्ता। श्यामसुंदरसेन), 'धर्मप्रकाश' (प्रकाशनारम्भसन 1859 ई. अहमदाबाद। मनसुखराम), साप्ताहिक 'तत्वबोधिनीपत्रिका' (प्रकाशनारम्भसन 1865 ई. बरेली। गुलाबशंकर), मासिक 'ज्ञानप्रदायिनीपत्रिका' (प्रकाशनारम्भसन 1866 ई. लाहौर। नवीनचंद्रराय), मासिक 'वृत्तान्तविलास' (प्रकाशनारम्भसन 1867 ई. जम्मूनगर। कश्मीर), 'सर्वजनोपकारक' (प्रकाशनारम्भसन 1867 ई. बेलनगंज, आगरा। पंडितपूर्णचंद्र), साप्ताहिक 'रतनप्रकाश' (प्रकाशनारम्भसन 1867 ई. रतलाम। पंडितकिशोरलालनागर,) मासिकपत्रिका 'कविवचनसुधा' (प्रकाशनारम्भसन 1868 ई. वाराणसी। भारतेन्दुहरिश्चंद्र), साप्ताहिक 'जगतसमाचार'

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

(प्रकाशनारम्भसन 1869 ई. दार-उल-उलूमप्रेस, आगरा), 'जगदानंद' (प्रकाशनारम्भसन 1869 ई. लताफतप्रेस, आगरा। ठाकुरसिंह), 'पापमोचन' (प्रकाशनारम्भसन 1869 ई. हिंदी-उर्दूकाद्विभाषीपत्र। कृष्णचंद्र), 'विघादर्श' (प्रकाशनारम्भसन 1869 ई., मेरठ), पाक्षिक 'समयविनोद' (प्रकाशनारम्भसन 1869 ई., नैनीताल), ब्रह्मसमाजीविचारोंकापत्र 'ब्रह्मज्ञानप्रकाश' (प्रकाशनारम्भसन 1869 ई., बरेली। केशवचंद्र), मासिक 'आर्यदर्पण' (प्रकाशनारम्भसन 1870 ई., शाहजहांपुर। मुंशीबख्तावरसिंह), सासाहिक 'अल्मोड़ाअखबार' (प्रकाशनारम्भसन 1871 ई., अल्मोड़ा। पंडितसदानंदसलवाल), 'हिंदीदीसिप्रकाश' (प्रकाशनारम्भसन 1872 ई., कलकत्ता। कार्तिकप्रसादखत्री)।वहीपृ. 236-37

12. जगदीशप्रसादचतुर्वेदी, हिंदीपत्रकारिताकाइतिहास, पृ. 24
13. वही, उद्धृत।
14. डॉ. अर्जुनतिवारी, हिंदीपत्रकारिताकाबृहदइतिहास, पृ. 87
15. देखें, कृष्णबिहारीमिश्र, हिंदीपत्रकारिता: जातीयचेतनाऔरखड़ीबोलीसाहित्यकीनिर्माण-भूमि, पृ. 56
16. जगदीशप्रसादचतुर्वेदी, हिंदीपत्रकारिताकाइतिहास, पृ. 23
17. रामचंद्रशुक्ल, हिंदीसाहित्यकाइतिहास, पृ. 291
18. उद्धृत, ए हिस्ट्रीऑफउर्दूजर्नलिजम, नादिरअलीखां, पृ. 215. पुन: उद्धृत, जगदीशप्रसादचतुर्वेदी, हिंदीपत्रकारिताकाइतिहास, पृ. 29
19. देखें, रामचंद्रशुक्ल, हिंदीसाहित्यकाइतिहास, पृ. 294
20. वीरभारततलवार (संपादक), राजाशिवप्रसादसितारेहिंद: प्रतिनिधिसंकलन, पृ. इक्कीस
21. रामचंद्रशुक्ल, हिंदीसाहित्यकाइतिहास, पृ. 294
22. देखें, जगदीशप्रसादचतुर्वेदी, हिंदीपत्रकारिताकाइतिहास, पृ. 35
23. देखें, रामचंद्रशुक्ल, हिंदीसाहित्यकाइतिहास, पृ. 294-95
24. हजारीप्रसादद्विवेदी, हिंदीसाहित्य: उद्भवऔरविकास, पृ. 223